आभार पुष्प

किसी भी कार्य को करने के लिए एवं नए रास्ते पर चलने के लिए एक उचित मार्गदर्शक की अत्यन्त आवश्यकता होती है। मेरे शोध प्रबन्ध की निर्देशिका विदुषी डा. ईना शास्त्री जिनका मैं हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करना चाहूंगी। जिनके असीम स्नेह एवं प्रोत्साहनवर्द्धक प्रेरणाओं और जिनके निर्देशानुसार मैं इस शोध प्रबंध का कार्य कर पायी हूँ।

'भाई जी' के सुपुत्र श्री मधूप मुदगूल तथा गांधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के लाइब्रेरी इंचार्ज श्री अमोलक चंद जैन जी की मैं अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण सामाग्री उपलब्ध कराकर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं आभार प्रकट करती हूँ लाइब्रेरी - दिल्ली यूनिवर्सिटी, दयालबाग यूनिवर्सिटी आगरा, वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान, अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़ हरियाणा जहाँ मुझे प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई।

भाई जी की शिष्या श्रीमति माया भट्टाचार्य, शिष्य सुधांशु बहुगुणा जी एवं गांधर्व महाविद्यालय के संगीत शिक्षक एवं गांधर्व वृन्द के कलाकार अरिन्दम मुखोपाध्याय ने पण्डित विनयचन्द्र मोद्गल्य जी से संबंधित सभी कार्यों में मेरा उत्साहवर्द्धन किया है उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

संगीत कला के प्रचार एवं विकास कार्य में विशेष योगदान देने वाले समाचार पत्र, मासिक, त्रैमासिक अथवा वार्षिक रूप में पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती रहती हैं जिनमें संगीत विषयक, लेख, स्वरलिपियां आदि प्रकाशित होते हैं मुझे इन पत्रिकाओं में संगीत के हर पक्ष की विपुल सामग्री मिली। मैं आभारी हूँ 'संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली' एवं उसमें कार्यरत लाइब्रेरी इंचार्ज 'श्रीमति स्वतन्त्र बोगरा' की जिन्हेंने मुझे हर संभव सहयोग दिया। प्रचार-प्रसार के माध्यम दिल्ली दूरदर्शन, डी.डी. भारती, यू ट्यूब आदि Sites से भी मुझे विपुल सामग्री प्राप्त हुई। शोध प्रबंध की सामग्री के प्रिटिंग कार्य में सहयोग देने पर नवजीवन पब्लिकेशन, निवाई के श्री पारसमल जैन का मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में मैं अपने पति श्री त्रिलोक चंद मुंजाल अपने पुत्रों पीयूष, आयूष और अपनी पुत्रवधू आयुषी का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे सभी पारिवारिक दायित्वों से मुक्त रखते हुए इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरी हर तरह से सहायता की, मेरा उत्साहवर्धन किया और मेरी सफलता की कामना की।

अन्जू मुंजाल